समाज विकास माला

माटी की मूरत जागी

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : २२

माटी की मूरत जागी

दैनिक जीवन में काम आनेवाले पेड़-पौधों की जानकारी

लेखक

रामचंद्र तिवारी

संपादक

यशपाल जैन

१९५८

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

तीसरी बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई है और जहांतक हो सका है, मिले-जुले कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। विषय ऐसे लिये गए हैं, जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उनपर विचार करेंगे और उन सुझावों की बुनियाद पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

तीसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

हमारे देश में कई तरह के पेड़-पौधे मिलते हैं। उनमें से बहुत-से हमारे धार्मिक उत्सवों में काम आते हैं। बहुतों की तो पूजा की जाती है। वे हमारे बड़े काम के हैं। उनसे हमारा जीवन हरा-भरा बनता है।

इस पुस्तक में कुछ चुने हुए पेड़ और पौधों की रोचक कहानी दी गई है। आप इसे पढ़ना शुरू करेंगे तो बिना पूरी किये नही छोड़ सकेंगे। एक के बाद एक करके बहुत-से पेड़-पौधे आते हैं और हमारे सामाजिक जीवनरूपी माटी की मूरत में जान डालते हैं।

आप इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। अकेले ही नहीं, दूसरों को भी पढ़ायें।

—संपादक

माटी की मूरत जागी

: १ :

एक बहुत बड़ा ताल था। लंबा-चौड़ा काफी था, लेकिन गहरा कम था। उसमें पानी था। पानी में लहरें थीं। लहरों में चमक थी। चमकती लहरें दूर-दूर से आती थीं। किनारे से टकराती थीं। किनारे के पास एक पौधा पानी में खड़ा था। पानी उसकी छाती तक था। कंधे पानी से बाहर थे। कंधे के ऊपर तीन लंबी बालें थीं। बालों पर दाने चिपके थे। हवा आती थी। बालों को छूती थी। चली जाती थी। बालें झुकती थीं। उठ जाती थीं। हवा पूछती—तुम नीचे क्यों झुकती हो? तुम ऊपर क्यों उठती हो? पर पौधा गुमसुम था। बोलता न था। गुनगुनाता था। जप करता था।

मौसम बदला। वसंत गया। गरमी आई। पौधे का गुनगुनाना बढ़ गया। जप तेज हो गया। बालें लहरा-लहराकर झुकने लगीं। झूम-झूमकर उठने लगीं। हरियाली चली गई। बालें दुबली होगईं। दाने भारी हो गए। पीले पड़ गए। रंग और भी पका। गहरा हो गया।

बालों ने अपने दाने किनारे पर चढ़ा दिये। उनका छोटा-सा ढेर लग गया। पत्तियां उदास पड़ गईं। पानी भी सूखने लगा।

पौधा सूखे के डर से कांप रहा था।

उसने एक आहट सुनी। वह चौंका। घबरा गया। आंखें फाड़ीं, चारों ओर देखा। देखा कि सामने बहुत बड़ा पत्ता है—हरा, मनुष्य के बराबर।

देखते-देखते एक तना नीचे से निकला। वह पत्तों को पंद्रह फुट ऊंचा उठा ले गया।

पौधा बोला, "तुम कैसे भूल पड़े, केले भाई ?"



माटी की मूरत

केले ने कहा, "मैं बहुत दिनों से तुमको देख रहा हूं। तुम किसी साधना में लगे हो। किसी जप में लगे हो। बताओ, बात क्या है ?"

केले की बात सुनी तो धान ने सिर उठाया। बोला, "विधाता ने मुझे एक काम सौंपा है।"

केले ने पूछा, "क्या ?"

धान ने कहा, "कई बरस पहले की बात है। मैं पानी में खड़ा था। पानी मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं बहुत खुश था। पानी बढ़ने लगा। छाती तक आया। कंधे डूबे। पानी न रुका। बढ़ता गया। मैं बिल्कुल डूब गया। तुम जानते हो कि पानी में डूबते हैं, तो दम घुटने लगता है। मैं घबरा गया। मैंने विधाता से विनती की। विधाता ने मेरे कान में कहा, "मनुष्य को जगाओ। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें पालेगा।" मैंने पूछा, "मुझे पता कैसे चलेगा कि मनुष्य जाग गया?" विधाता ने कहा, "वह किनारे पर एक मूरत रखी है। वह माटी की है। इस देश में उसका नाम भारत-जीवन है। जब तुम्हारा तप सफल हो जायगा तो भारत-जीवन जग जायगा। इस मूरत में जान पड़ जायगी। अभी वह बैठी है। तब उठकर खड़ी होगी। चलने-फिरने लगेगी।"

केले ने पूछा, "तुमने क्या किया ?"

धान बोला, "तबसे मैं तप करता हूं। जप करता हूं।"

केले ने पूछा, "किसका जप करते हो ?"

धान बोला, "मैंने सभी देवताओं का जप किया है। मेरे चावल 'अक्षत' कहलाते हैं। वे सभी देवताओं को भाते हैं। मनुष्य ने भी तो सबसे पहले मेरा ही दाना खाया था।"

केला बोला, "झूठे ! महाझूठे ! मनुष्य ने सबसे पहले धान नहीं खाया, केला खाया है। हजारों बरस पहले की बात है, जब वह केले पर गुजर करता था, उस समय धान का कहीं नाम भी न था।"

धान ने केले की बात पर ध्यान नहीं दिया। बोला, "मैं हजारों बरस पुरानी दुहाई नहीं देता। आज दुनिया में जितना हम पैदा होते हैं, उतना दूसरा कोई दाना नहीं होता। भारत में गेहूं सिर पटककर रह गया। अब भी उसकी पैदावार हमसे चौथाई है। मैं मनुष्य-जाति का प्राण हूं। मेरे बराबर पवित्र कोई और पौधा नहीं है।"

केले ने कहा, "बनो मत। मनुष्य भी जानता है कि तुम पवित्र पौधे नहीं हो। पवित्र है केवल तुम्हारा बीज, जो मोती की तरह चमकता है।"

केले की बात धान को बुरी लगी। बोला, "लंबे हो इसीसे लंबी बात करते हो।"

केले ने कहा, "मैं लंबी बात नहीं करता। सब जानते हैं कि मैं पवित्र हूं। अच्छे कामों में मुझे आगे रखा जाता है। मैं पवित्रता का जितना ध्यान रखता हूं, कोई पौधा नहीं रखता। मेरा एक पौधा एक ही बार फल देता है। दूसरी बार फल देने के लिए नया पौधा आता है।"

धान बोला, "इसमें कौन-सी पवित्रता है? मेरा भी तो नया पौधा ही दुबारा फलता है।"

केले ने नीचे देखा। बोला, "तुम तो एक बार फल-कर मर जाते हो। नया बीज पड़ता है तो नया पौधा बनता है। मैं तुम्हारी तरह मरता नहीं, चोला भर बदलता हूं।"

धान बोला, "तुम ऊंचे हो। मैं तुम्हारी बात नहीं काटता। तुम सच्चे हो तो अपने देवता को बुलाओ और इस मूरत में जान डालो।"

केला बोला, "चुप रहो। देखते जाओ। मेरे देवता इस माटी में कैसे जान फूंकते हैं।"

: २ :

केले ने अपने देवताओं की विनती की। अपना सिर

झुकाया। अपने पत्ते बिछाये। अपने फल भेंट चढ़ाये। पर मूरत टस-से-मस न हुई। वह सागर के पानी के ऊपर एक धब्बे को देखती रही। धब्बा दूर से चला आ रहा था। किनारे पर आ पहुंचा। घासों को पकड़कर ठहर गया।

उसने न धान को देखा, न पत्तों पर सजे केलों को देखा। वह मुसकराया। उसमें अंकुर फूटा। पौधा बना और बढ़ने लगा। बढ़ता गया। ऊंचा उठता गया। जब केले से ऊंचा हुआ तो केला दुखी हुआ, धान सुखी हुआ।

नया पौधा न धान की खुशी से फला, न केले के दुख से बिचका। वह बढ़ता गया। केले से दुगना ऊंचा होगया तो रुका। उसका तना लंबा था। पत्ते बड़े थे। किनारे कटे थे। पत्तियों की डंडियां मजबूत थीं। पत्तियों के नीचे फूल आये। उनमें फल लगे। फल गोल-गोल थे।

अब पेड़ ने नीचे देखा। धान को देखा। केले को देखा। वह सब कुछ समझ गया। ऊंचाई पर से बोला, "मेरा नाम नारियल है। मैं सागरपार से आया हूं। हजारों मील तैरा हूं। केले भाई, तुम हो छोटे, पर अपनेको बड़ा समझते हो। तुम इतने पवित्र नहीं हो कि इस मूरत में प्राण फूंक सको।"

केले ने सिर उठाया। बोला, "हमने अपनी-सी

कर ली। अब देखें, तुम क्या तीर मारते हो!"

नारियल ने कहा, "अब मेरी समझ में आ गया। मनुष्य को फल खिलाकर तुम पवित्र बन बैठे हो। तुम्हारी पवित्रता सस्ती है। तभी तो ब्याह में तुमको दरवाजे पर दरबान बनाकर खड़ा कर देते हैं।"

केला बोला, "नारियल, तुम ऊंचे हो। मैं तुम्हारा मुंह नहीं पकड़ सकता। तुम्हारे फलों की क्या बड़ाई करूं? किसीको सिर फोड़ना हो तो उनसे टक्कर मारे।"

नारियल ने पत्ते खड़काये। बोला, "मेरे फल दैवी फल हैं। वे करोड़ों मनुष्यों को सहारा देते हैं। मेरे जल में ठंडक है। मेरी जटा में बल है। मेरे गूदे में तेल है। मेरा तेल मनुष्य के प्राणों को चिकनाई देता है। मेरे फलों की पवित्रता मामूली नहीं है। वे रंग-बिरंगे कपड़ों से सजाये जाते हैं। कलश पर सबसे ऊंचे बैठाये जाते हैं। सब देवता मुझे चाहते हैं। तुम चुपचाप खड़े रहो और मेरा करतब देखो।"

नारियल विनती करने लगा कि धान चीख उठा। केले ने मोटी सीटी बजाई। आकाश में खड़खड़ हुई। नारियल को क्रोध आगया। बोला, "कौन है, जो मेरे तप को तोड़ रहा है?"

उसकी बात अभी पूरी नहीं हो पाई थी कि एक

गोली नीचे आई। उसका रंग पीला था।

एक छोटा-सा फल था। उसीके जैसा। उसने अब अपना घूंघट हटा दिया। सुपारी का मुंह साफ दिखाई देने लगा। नारियल उसकी ओर एकटक देखता रह गया।

सुपारी ने नारियल को देखा। वह क्रोध से लाल होगई। बोली, "तुम्हें लाज नहीं आती। तुम देवताओं की बराबरी करते हो। तुम्हारे ऊपर का छिलका ही मोटा नहीं है, तुम्हारी समझ भी मोटी है। मनुष्य तेल के लोभ से तुम्हें पालता है। तुम समझते हो कि वह तुम्हारी पूजा करता है। अरे अज्ञानी, तुम्हारी पूजा नहीं की जाती। तुम पूजा में चढ़ाये जाते हो। भेंट में दिये जाते हो।"

केला खुश होगया। बोला, "तुम ठीक कहती हो। इस नारियल का शरीर बड़ा है। आंखें छोटी हैं। जब देखता है तो अपनेको ही देखता है।"

नारियल ने कहा, "केले, तुम छोटे हो। मैंने तुम को क्षमा कर दिया है। सुपारी देवी, तुम मेरे ही वंश की हो। तुमसे भी मैं कुछ नहीं कहूंगा। तुमने मेरा तप तोड़ा है। जो होना था वह हो गया।"

सुपारी हाथ नचाकर हँस पड़ी। बोली, "अपने को देवता कहने से कोई देवता नहीं हो जाता। मनुष्य बहुत चतुर होता है। तुम्हारे झूठ से उसकी मूरत जागनेवाली नहीं है। अरे, मोटे छिलकेवाले, देवता तो मैं भी नहीं हूं।



सुपारी

पर जब देवता की मूरत नहीं मिलती तो मनुष्य मुझ-पर रंग-बिरंगे धागे लपेटता है। मुझे देवता बना लेता है। बस, अब तुम चुपचाप बैठ जाओ। देखो, मैं इस मूरत में कैसे जान डालती हूं।"

सुपारी ने मनुष्य की अनगढ़ मूरत की ओर देखा। वह शान से दो डग आगे बढ़ गई।

उसने गणेशजी को याद किया। सूरज को याद किया। चंद्रमा को याद किया। बुध और शुक्र को याद किया। गुरु और शनि को याद किया। राहु और केतु को याद किया। अग्नि और वरुण को याद किया। देवताओं के राजा इंद्र को याद किया। उसका

मुंह तपने लगा। तेज से चमकने लगा।

धान, केला, नारियल ने सुपारी की जय बोली। सुपारी के तप से मूरत कांपने लगी। लगता था कि वह जग जायगी। पेड़-पौधों की साधना सफल हो जायगी।

तभी गजब होगया।

: ३ :

पानी के किनारे आहट हुई। धान के मुंह से चीख निकली। केले ने झुककर देखा। एक चौड़ा फन खड़ा था। फन हरा था। उसने पत्ते खड़काये। पर फन भागा नहीं। वह सुपारी की ओर बढ़ने लगा, धीरे-धीरे नारियल ने चाहा कि लुढ़ककर उसे रोक दे। फन चालाक निकला। वह नारियल के ऊपर से कूद गया। सुपारी के पास जा पहुंचा। उसनें सुपारी को छुआ। धीरे-से बोला, "तुम क्या कर रही हो? पान को भूल-कर देवता को याद करती हो? देवता अकेली की बात कैसे सुनेंगे?"

पान ने छुआ तो सुपारी कांप गई। उसका तेज जाता रहा। मुंह उतर गया। तप टूट गया। वह खंड-खंड होगई। बोली कुछ नहीं। आंखों से आंसू बह चले।

नारियल बोला, "पान, तुमने यह ठीक नहीं

किया।"

केले ने कहा, "अरे पान, तुम यहां क्यों आये ?"

पान ने कहा, "मैंने सुना कि सुपारी तप कर रही है। वह मूरत को जगाना चाहती है। मैं तुरंत भागा। सुपारी छोटी है। पर अपनेको बड़ा समझती है। उसके तप से मूरत नहीं जाग सकती।"

धान बोला, "पान भाई, तुमने सुपारी का तप तो तोड़ दिया। तुम सदा हरे रहते हो। इस मूरत को भी हरा कर दो।"

पान बोला "मैं न सुपारी हूं। न नारियल हूं। मैं सीधा-सादा पत्ता हूं। मूरत जाग उठेगी तो मैं बीड़ा बनकर उसके सामने आ जाऊंगा।"

पान की बात पूरी नहीं होने पाई। एक ओर से खड़-खड़ की आवाज आई। सबने देखा। एक बड़ा पेड़ दौड़ा चला आ रहा है। पेड़ का रंग सांवला था। उसमें हरे, पीले, लाल फल लगे थे। उसका शरीर हिलता था। फल टपकते थे। वह तालाब के किनारे पहुंचा और पानी में घुसकर खड़ा होगया।

बोला, "अरे पान के पत्ते, तुझे शरम आनी चाहिए।"

नारियल ने पत्ते हिलाकर पूछा, "महाशय,

आप कौन हैं, जो पत्तों के राजा से ऐसी बातें करते हैं।"

पेड़ हँसने लगा। खूब हँसा। जब उसके पेट में बल पड़ गए तो बोला, "पान और पत्तों का राजा ! जो सूरज की धूप भी नहीं सह सकता, उसे राजा कौन मानेगा ? पान एक खुशामदी पत्ता है। उसमें न बल है, न साहस। न दम है, न जान।"

केले ने पत्ते फैलाकर कहा, "यह बताइये कि आप हैं कौन ?"

पेड़ बोला, "मैं खटाई का स्वामी आम हूं। मैं फलों का राजा आम हूं।"

नाम सुना तो पेड़-पौधे आंखें फाड़कर उसकी ओर देखने लगे।

धान ने कहा, "आम !"

आम बोला, "मैं जानता था कि पान किये-धरे पर पानी फेर देता है। मैं तभी यहां दौड़ा आया। जो डर था, सच निकला। भाई, मैं पवित्र पेड़ नहीं हूं। मेरी लकड़ी कभी-कभी हवन में जलाई जाती है। मेरे पत्तों की बंदनवार बनाई जाती है। मैं भी इस यज्ञ में शामिल होना चाहता हूं। मैं कुछ कर तो नहीं सकता, पर मेरा शरीर आपकी सेवा में है।"

आम की बात सुनी तो सब पौधों ने तालियां बजाईं।

तालियां बंद हुईं तो एक छोटा-सा पेड़ और आ पहुंचा। चारों ओर सुगंधि फैल गई।

धान ने पूछा, "आप कौन हैं ? आपके शरीर से यह सुगंधि कैसी निकल रही है ?"

पेड़ ने कहा, "मैं नर-नारायण का सेवक हूं। मेरा नाम चंदन है। मैंने आम की बड़ी बात सुनी। देवता ने मुझे सुगंधि दी है। मैं पवित्र पेड़ नहीं हूं। मैं घिस-कर नर-नारायण पर चढ़ाया जाता हूं। मेरा शरीर आपकी सेवा में है।"

चंदन की बात पूरी हुई तो एक और पेड़ चिल्लाया, "मेरा शरीर भी, मेरा शरीर भी।"

केले ने पूछा, "आप कौन हैं, महाशय ?"

पेड़ ने बताया, "मुझे लाल चंदन कहते हैं।"

: ४ :

देवता को रिझाना है। मनुष्य को जगाना है। यह बात दूर तक फैल गई। पेड़-पौधे सोचने लगे, विचारने लगे। उन्होंने तय कर लिया कि मूरत को जगा लेंगे, तभी चैन से बैठेंगे।

सागर का पानी घटने लगा। हवा गरम होगई।

आंधी चलने लगी। धूल उड़ने लगी।

धान ने सोचा—अब क्या होगा।

केला घबराया।

नारियल के पैर जलने लगे।

सुपारी रुंवासी हो आई।

सबपर चिंता छा गई। मूरत जगाने की बात पीछे पड़ गई। जीने की बात सामने आ गई।

सबके तने झुक गए। पत्ते पीले पड़ गए। तन पर उदासी छा गई।

तभी एक आवाज आई, "घबराओ मत। घबराओ मत। जितना पानी है उसीसे काम चलाना सीखो। सूखा अधिक दिन नहीं रहेगा। जड़ों को सजग रखो। यह समय निकल जायगा।"

चंदन बोला, "यह कौन उपदेश दे रहा है?"

आम ने देखा कि एक ऐंठा-सा पेड़ है। उसका रंग सांवला है। पत्ते छोटे हैं, गोल हैं। टहनियों में कांटे हैं।

सुपारी बोली, "तुम कौन हो? मेरे पास आ जाओ। मैं धूप से तुम्हारी रक्षा करूंगी।"

पेड़ ने कहा, "मेरा नाम बेर है। मैं धूप से नहीं डरता। हमें विधाता की बात भुलानी नहीं चाहिए।"

पान बोला, "जब अपना जीना दूभर हो रहा है तब इस मूरत में जान डालने की बात किसे सूझती है?"

आम बोला, "पान तुम चुप रहो। तुम्हारे जैसा कमजोर मैंने नहीं देखा।"

चंदन ने कहा, "तुम सचमुच बड़े डरपोक हो।"

बेर बोला, "मैं इतना पवित्र नहीं कि देवता को रिझा सकूं। मेरे फल देवता को चढ़ते हैं। कुछ कहते हैं, मुझमें देवी रहती हैं। मैं मूरत को नहीं जगा सकता। पर यह कहता हूं कि पेड़-पौधे इसको जगा सकते हैं।"

पान ने कहा, "बात मत बनाओ। जगा सकते हो तो जगाओ।"

बेर बोला, "मूरत जगेगी। जरूर जगेगी। इसे वे जगायेंगे जो जी सकते हैं। जो सूखे से हांफने लगते हैं, वे इसे नहीं जगा सकते।"

बेर की बगल से आवाज आई, "ठीक कहते हो। जो जियेगा वही जगायेगा।"

नारियल के फल ने आंख उठाकर देखा, एक बड़ी-सी गेंद उसकी ओर आ रही है। उसने हाथ ऊपर उठाये। गेंद ने उसके हाथों को तोड़ दिया। आकर उसके सिर से टकराई।

उसमें से आवाज निकली, "मैं बेल हूं, बेल, शिवजी का बेल। शंकरजी का बेल। मेरे पत्ते उनको बहुत भाते हैं। वे उनपर चढ़ाये जाते हैं।

: ५ :

सुपारी ने कहा, "भगवान् शंकर के प्यारे, उनसे कहो कि मूरत में जान डाल दें।"

बेल बोला, "तुम बहुत भोली हो। जान भीख मांगने से नहीं मिलती। मूरत को जगाना चाहते हो तो अपनी जान बांटो और उसे दो।"

पान बोला, "राम-राम-राम, अब अपनी जान भी बांटनी पड़ेगी। मेरी जान तो छोटी-सी है। बांट दूंगा तो बचेगा क्या ?"

बेल ने कहा, "बचे या न बचे, सौदा यह जान का है।"

हवा गरम होती जा रही थी।

पान का दम फूलने लगा। वह छाया खोजने लगा। नारियल के नीचे छिपने लगा। केले की हालत बुरी थी। दम साधे खड़ा था।

सुपारी का पेड़ दूर देख रहा था। वह बोल उठा, "वह कौन चला आ रहा है? इस गरमी में भी कितना हरा है!"

नारियल ने कहा, "वह कोई वीर है। उसके पास बहुत-से भाले हैं।"

बेल बोला, "तुम उसे नहीं जानते। वह वीर नहीं, महावीर है। भगवान् शिव का सेवक है। उसके शरीर में विष रहता है। बीजों में विष का भंडार है।"



बेल

पान ने कहा, "बीजों में विष का भंडार है तो उसके बीज मर क्यों नहीं जाते?"

बेल बोला, "मरेंगे क्यों? वे विष खाते हैं। उसी-पर जीते हैं। विष खाकर जीना उसने शिवजी से सीखा है।"

सुपारी ने कहा, "उसके पास कितना अच्छा बिगुल है! एकदम सफेद। हिमालय की बर्फ-सा सफेद। हंस के पंखों-सा सफेद। चांद की चांदनी-सा सफेद।"

बेर ने बताया, "वह धतूरे का फूल है।"

पान ने डरकर कहा, "धतूरा आ रहा है। अब क्या होगा ?"

बेल ने समझाया, "डरो मत। धतूरा तुमसे कुछ नहीं कहेगा।"

धतूरा आ पहुंचा। उसने बिगुल बजाया।

मूरत एक बार हिली। सबने धतूरे की जय बोली।

धतूरे ने कहा, "जय मेरी नहीं, भगवान् शंकर की है। उन्हींकी दया से मैं इस गरमी में भी जीता-जागता हूं।"

केला बोला, "तुम वीर हो। तुमने गरमी को हरा दिया है। सूखे को जीत लिया है।"

धतूरे ने कहा, "सूखे को जीतनेवाला मैं नहीं। सूखे को जीतनेवाला है आक। वह शिवजी को बहुत प्यारा है। उसका रूप भी सफेद है। उसकी नसों में सफेद दूध बहता है। उसके पत्तों पर सफेदी छाई रहती है। उसके फूल सफेद होते हैं। उसके फलों में से सफेद रुई निकलती है।"

धान बोला, "आक मूरत में जान डाल सकता है ?"

बेल ने कहा, "लो वह आगया आक।"

आक आया। उसने अपने डोंढे फड़फड़ाये। फूलों के भीतर का बैंगनी रंग दिखाया। बोला, "जय शंकर !"

सब पेड़-पौधे एक साथ बोले, "जय शंकर !"

आक ने कहा, "शिवजी की महिमा अपार है। वह बिगड़ी बनानेवाले हैं। बनी को पार लगानेवाले हैं। वे भगतों की सुनते हैं। विनती पर रीझते हैं। जो मांगा जाता है, वह देते हैं। जो नहीं मांगा जाता, वह भी देते हैं। उनकी जय हो !"

मूरत हिली।

पान ने कहा, "जय हो !"

आक बोला, "अरी मूरत, जाग ! मूरत, जाग ! जाग ! माटी की कैद तोड़ दे। अपनी जड़ता छोड़ दे। उठ, जीवन को पकड़ ! जाग, जाग, जाग। मैं आक कहता हूं, जाग !"

मूरत की पुतलियां हिलीं। हिलकर रह गईं।

आक चकित रह गया।

नारियल के पेड़ के नीचे से भीनी-भीनी हँसी सुनाई दी।

आक ने हँसनेवाले को देखा। वह सकुचा गया।

: ६ :

नारियल के पेड़ ने नीचे देखा। सुपारी के पेड़ ने

देखा। केले के पेड़ ने देखा। सब पेड़-पौधों ने देखा।

एक छोटा-सा पौधा। उसपर रोली के छींटे हैं। उसपर अक्षत चढ़े हैं। उसपर फूल चढ़े हैं। वह बोली, "मैं भी इस यज्ञ में शामिल होने आई हूं।"

धान ने कहा, "तुलसी महारानी, आपकी जय हो! आपके पत्ते रोग दूर करनेवाले हैं। भव-सागर से पार उतारनेवाले हैं। आपकी हरियाली मन को मोहनेवाली है, आप हरिजू की प्यारी हैं। संतों की दुलारी हैं। आपकी महिमा अपार है। इस मूरत पर निगाह डालिये। इसमें प्राण जगाइये।"

तुलसी ने कहा, "राम-राम, प्राण जगाने का काम विधाता का है। हम तो सेवा करनेवाले हैं। बहुत कहो तो लीला देखनेवाले हैं। लो, यह गोपाल का प्यारा कदम्ब आगया, इससे पूछ लो।"

कदम्ब ने अपने गोल फूलों से सुगंधि की फुहारें उड़ाईं। अपनी गठीली भुजाओं को फड़काया। बोला, "तुलसी-रानी की बात ठीक है। हम तो गायवाले को जानते हैं। गोबरधन-धारी को जानते हैं। माखनचोर को जानते हैं। रासबिहारी को जानते हैं। हम लीला देखते हैं। छके रहते हैं।"

कदम्ब की बात पूरी नहीं हो पाई कि धरती पर

से एक हरी चिनगारी उठी। यह कोप की चिनगारी थी। चिनगारी के पीछे एक कड़क थी। कड़क में से आवाज आई, "चुप रहो। कदम्ब, चुप रहो। तुम लीला देखना चाहते हो तो आकाश में उठ जाओ। धरती पर रहोगे तो लीला में भाग लेना होगा। जिसे तुम अपना समझते हो, उसमें से बांटकर देना होगा।"

यह वाणी तीर की तरह पेड़-पौधों के पार हो गई। मुरझाये प्राण हरे होगए। सोई हिम्मत जाग गई।

पेड़-पौधों ने कहा, "दूब भवानी की जय!"

पान बोला, "तुम्हारी जान तो बहुत बड़ी है, दूब भवानी। तुम्हारी जरा-सी जड़ जहां पड़ जाती है वहीं हरियाली लहलहा उठती है। तुम करोड़ों पशुओं को जीवन देती हो। मौत तुमसे डरती है। तुम अपनी जान इस मूरत को क्यों नहीं बांट देतीं?"

दूब बोली, "मैं तो अपनी जान सदा बांटती रहती हूं। इस मूरत को जगाने के लिए मुझसे भी बड़ी जानवाला चाहिए।"

धान ने कहा, "कुश को बुलाओ। मैं उसे जानता हूं। उसकी जड़ें धरती में गहरी जाती हैं। वह जहां उग आती हैं, वहां जम जाती हैं। जाने का नाम नहीं लेती। उसके प्राण बहुत बड़े हैं।"

सुपारी बोली, "मैंने कुश को देखा है। मैं एक यज्ञ में गई थी। वहां वह भी आई थी। बहुत पवित्र समझी जाती है। वह सूखी हुई थी। फिर भी उसमें हरे की जान थी।"

मूरत के आसपास की घासें हिल उठीं। वे लंबी थीं। उनमें से एक झंकार निकलने लगी।

दूब ने देखा। हँसी। बोली, "यह तो कुश हें जो मूरत को संभाले बैठे हैं।"

कुश ने कहा, "मैंने अपने प्राण इस मूरत को बांट दिये हैं। इसे गरमी से बचा लिया है। खंड-खंड होने से रोक दिया है।"

जिस समय सब पेड़-पौधे कुश की ओर देख रहे थे, पान डर के मारे कांप रहा था। उसके मुंह से चीख निकल गई।

नारियल ने पूछा, "क्या बात है ?"

पान बोला, "वह देखो, कोई आ रहा है। वह यहां आ जायगा। मैं उसके नीचे कुचल जाऊंगा।"

बेर ने पूछा, "वह कौन है ?"

पान ने अपनी चोंच उठाकर कहा, "वह काला-काला कितना बड़ा है ! उसकी कितनी सूंड़ें हैं ! वह कोई नई तरह का हाथी है। अब क्या होगा ?"

केला ठठाकर हँस पड़ा। बोला, "यह सूंड़ नहीं हैं, जटाएं हैं। वह नई तरह का हाथी नहीं है। वह बड़दादा हैं। देखो, उनके कितने तने हैं।"



बरगद

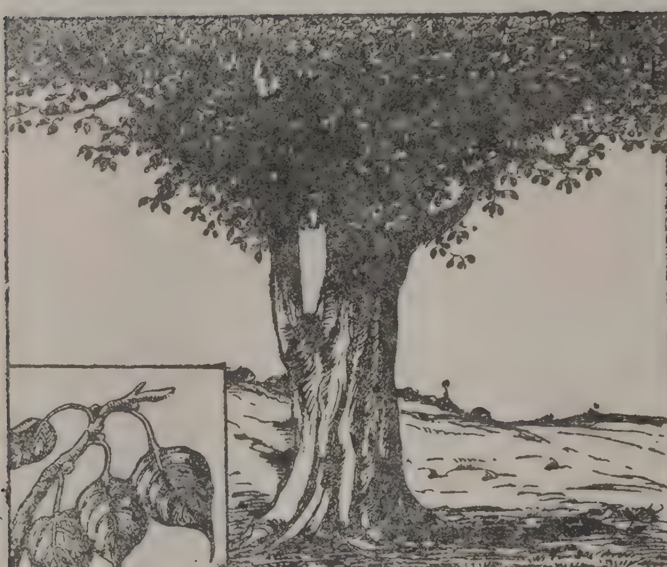
धान बोला, "अब चिंता की बात नहीं। बड़दादा आ रहे हैं। जरूर कुछ करेंगे।"

नारियल बोला, "उनमें भूत रहते हैं। देवता रहते हैं। पंछी रहते हैं। उनकी पूजा होती है।"

बड़दादा आगए। उन्होंने निगाह डालकर सबको देखा। उनकी चिंता को देखा। बोले, "घबराओ मत। मूरत में जान पड़ेगी, जरूर पड़ेगी।" उन्होंने अपनी जटाओं को हिलाया।

तभी देखते क्या हैं। दूर से पीपल महाराज चले आ रहे हैं। सब देखकर सहम गए। भगवान ने उन्हें पेड़ों में सबसे ऊंचा माना है।

पीपल आया। उसका तन निखरा था। मज़बूत था। सबने उसका स्वागत किया। वह भी मूरत को जगाने में लग गया।



पीपल

सुपारी ने धीरे-से कहा, "वृक्षों के राजा ने अपनी जान बाजी पर लगा दी है।"

पान ने कहा, "अब मूरत जाग उठेगी।"

धान बोला "जरूर जागेगी।"

मूरत की पुतली घूमी। हाथ हिले। पैर सीधे हुए। उसने उठकर खड़ा होना चाहा, पर खड़ी हो नहीं सकी। पीपल का बल हार गया। उसने घुटने टेक दिये। पेड़-पौधों का रंग उड़ गया।

: ७ :

पेड़ हारे। सोचना-समझना जरूरी होगया। उन्होंने सोचा, समझा और विचारा। वे विधाता की ओर मुड़े। उन्होंने उसके सामने घुटने टेक दिये। वे उसकी बिनती करने लगे। उसकी उपासना में लीन

होगए। उन्होंने अपनी कमजोरी बताई। विधाता की बड़ाई की। कीर्तन किया। झूम-झूमकर कीर्तन किया। नाच-नाचकर कीर्तन किया। कीर्तन में तन की सुध भूल गए। कीर्तन चलता रहा। दिनों तक चला। महीनों तक चला।

इतने में उन्होंने देखा, दूसरों को दिखाया। सागर के पानी पर कोई तैर रहा है। पास आ रहा है। पौधों ने देखा कि उसके पत्ते चौड़े हैं।

सुपारी ने कहा, "वह कमल है।"

केले ने कहा, "कमल ! वह नीला होता है, लाल होता है। उसमें बहुत-सी पंखुड़ियां होती हैं।"

धान ने कहा, "सबसे पहले कमल पैदा हुआ था।"

नारियल बोला, "विधाता ने कमल पर बैठकर संसार बनाया है।"

केले ने बताया, "कमल हरिजू की नाभि से पैदा हुआ है।"

पान ने कहा, "नारायण कमल को सदा हाथ में रखते हैं।"

बेल बोला, "भगवान् का मुख कमल जैसा है।"

बेर ने कहा, "उनके हाथ कमल जैसे हैं।"

आक बोला, "उनके चरण कमल जैसे हैं।"

सुपारी ने कहा, "कमल जीवन की निशानी है।"

पीपल ने बताया, "कमल के बीज चार-पांचसौ बरस बाद भी उग आते हैं।"

बड़ ने कहा, "कमल के समान प्राणवान कोई और नहीं है।"

कमल पास आगया। पत्तों की कुंज, उसके बीच में लाल फूल, सुंदर, बहुत ही सुंदर।

पान ने पूछा, "आपने कैसे दया की ?"

कमल ने कहा, "पेड़-पौधों ने विनती की। विधाता का आसन डोला। मैं ही विधाता का आसन हूं। उन्होंने मुझसे कहा, "जाओ, देखो।"

पान ने कहा, "आसन डोला तो उन्होंने आसन को ही भेज दिया।"

धान ने बताया, "यह पेड़-पौधों का यज्ञ है। मूरत में जान फूंकनी है।"

कमल ने पेड़-पौधों को देखा। मूरत को देखा।

वह सागर के किनारे आ गया।

उसने अपने पत्ते फैलाये। फूल मूरत की ओर झुक गया। कमल ने विधाता को याद किया। अपनी जान को फूल में इकट्ठा किया। आसपास की हवा कांपने लगी। जान लपट बनकर हवा में मिलने लगी। मूरत

की ओर ढुलने लगी। प्राण मूरत को ओर बहने लगे। मूरत कमल की सुंदरता पर मोह गई। माटी के प्राण हिल गए। उसमें जान पड़ गई।

मूरत सिहरी। कांपी। हाथ हिलाये। पैर सीधे किये। अंगड़ाई ली और फिर उठकर खड़ी होगई।

सब पेड़-पौधे खुश होगए। चिल्लाकर कमल का जय-जयकार करने लगे।

मूरत आगे बढ़ी। उसने कमल को सिर झुकाया। पान को सिर चढ़ाया। पान-सुपारी को मुंह में रखा और नारियल को हाथ में उठा लिया। हँसी तो जीवन लहलहा उठा।

पेड़-पौधों का यज्ञ पूरा हुआ। उनकी साधना सफल हुई।

Name of the Borrower	Card No.	Due Date

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की क़हानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे